भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संबंध में वर्ष 2023-2024 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन तथा ऑडिट रिपोर्ट के साथ वार्षिक एकाउंट्स को लोक सभा / राज्य सभा के पटल पर प्रस्तुत किये जाने हेतु समीक्षा वक्तव्य

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है। यह देश का शीर्ष और प्रमुख चिकित्सा अनुसंधान संगठन है जो जैव चिकित्सा अनुसंधान की योजना, विनियमन, समन्वय, कार्यान्वयन और प्रोन्नति का नेतृत्व करता है। यह दुनिया के प्राचीनतम चिकित्सा अनुसंधान निकायों में से एक है। सन् 1911 में, भारत सरकार ने देश में चिकित्सा अनुसंधान को प्रायोजित और समन्वित करने के विशिष्ट उद्देश्यों के साथ भारतीय अनुसंधान निधि संघ (आईआरएफए) की स्थापना करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया था। स्वतंत्रता के बाद, सन् 1949 में, आईआरएफए के कार्यों और गतिविधियों का काफी विस्तार करते हुए, इसे भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के रूप में पुनः नामित किया गया। आईसीएमआर ने सार्वजनिक स्वास्थ्य, नैदानिक देखभाल और नवाचार में अभूतपूर्व अनुसंधान, रणनीतिक सहयोग और साक्ष्य-आधारित नीति समर्थन के माध्यम से प्रगति को आगे बढ़ाते हुए 2023-24 में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। वर्ष 2023-24 के दौरान की आईसीएमआर की प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं:

1. आईसीएमआर ने अपने ₹2,350.12 करोड़ के आवंटित बजट के 99.71% भाग का उपयोग, इसके सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इंट्राम्यूरल अनुसंधान (हमारे संस्थानों द्वारा संचालित) और एक्स्ट्राम्यूरल पहलों (एक्स्ट्राम्यूरल परियोजनाओं और संस्थानों को वित्तपोषण के माध्यम से संचालित) को वित्तपोषित करने के लिए किया है।

2. इस ऐतिहासिक वर्ष में, हमने 31 भारतीय पेटेंट, 6 डिज़ाइन पेटेंट, 9 कॉपीराइट, 4 ट्रेडमार्क और 4 विदेशी पेटेंट दर्ज करवाए है। यद्यपि पहले से दायर पेटेंट में से 24 भारतीय पेटेंट और 4 विदेशी पेटेंट पहले से ही प्राप्त कर रखे है।

3. कुल 35 तकनीकियों को सफलतापूर्वक मान्य किया गया, जिसमें 3 प्रमुख नवोन्मेषों का हस्तांतरण किया गया – प्रथम- रक्तस्राव के विकारों को संबोधित करने वाला और दो वैश्विक महामारी की तैयारी पर ध्यान केंद्रित थी। इसके अलावा, रणनीतिक लाइसेंसिंग और व्यावसायीकरण से संबंधित तीन करारों को अंतिम रूप दिया गया।

4. आईसीएमआर के संस्थानों में उच्च प्रभाव वाली पहलों को आगे बढ़ाने के लिए इंट्राम्यूरल अनुदान के रूप में ₹698.94 करोड़ रुपयों का उपयोग किया। उल्लेखनीय नई पहलों में, संचारी रोगों में 36 बहुउद्देशीय परियोजनाएं, असंचारी रोगों में 34, और प्रजनन बल स्वास्थ्य औय पोषण में 7 बहुउद्देशीय परियोजनाएं शामिल है। जो भारत की गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने पर हमारी ध्यानपूर्ण रणनीतियों पर प्रकाश डालती है।

5. चार प्रमुख श्रेणियों: डिस्कवरी, डेवलपमेंट, डिलीवरी और डिस्क्रिप्शन में प्रभावशाली जैव-चिकित्सा अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए एक्सट्राम्यूरल अनुदानों के लिए ₹896.18 करोड़ रुपये आवंटित किए।

192

धनराशि का एक महत्वपूर्ण भाग डिस्कवरी (38%) और डेवलपमेंट (35%) के लिए समर्पित था, जो नवोन्मेष और मूलभूत अनुसंधान के अनुप्रयोग के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। कुल मिलाकर, लघु, मध्यवर्ती और प्रोन्नत अनुसंधान कार्यक्रम केंद्र में 725 नए एक्स्ट्राम्यूरल अनुदान शुरू किए गए, जो अनुसंधान और नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिए हमारे समर्पण पर बल देते हैं।

6. इंट्राम्यूरल और एक्स्ट्राम्यूरल अनुसंधान कार्यक्रमों से कुल 3300+ शोध पेपर प्रकाशित हुएं है। पिछले वर्षों में अधिकांश वित्तपोषण इंट्राम्यूरल शोध से 1,500 से अधिक पेपर प्रकाशित हुए है, जिनमें सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए वैज्ञानिक प्रगति और साक्ष्य-आधारित समाधानों में हमारे महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला गया है। इसी दौरान , एक्स्ट्राम्यूरल परियोजनाओं के परिणामस्वरूप 1,809 पेपर प्रकाशित हुए, जिससे वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि हुई और सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार हेतु नए समाधान सामने आए।

7. इसके अलावा, आईसीएमआर ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान की प्राथमिकताओं को संबोधित करने वाले अनुसंधान के लिए लक्षित सहायता प्रदान किया है, जो साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोणों के माध्यम से महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौतियों से निपटने के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर देता है। इस वर्ष, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, त्वरित आपातकालीन देखभाल, ओरल स्वास्थ्य, नवजात मृत्यु दर (एनएमआर), मृत शिशु जन्म (स्टिलबर्थ), एनीमिया, कैंसर, असंचारी रोगों के लिए एम्बुलेटरी देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य, तपेदिक (टीबी), और रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) सहित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में 16 परियोजनाओं को वित्त पोषित किया गया। ये परियोजनाएँ देश भर में 177 स्थलों पर फैली हुई हैं, जो स्वास्थ्य देखभाल की विभिन्न आवश्यकताओं का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए व्यापक क्षेत्रीय और जनसांख्यिकीय प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती हैं।

8. वैज्ञानिक और नवप्रर्वतन अनुसंधान अकादमी के सहयोग से आईसीएमआर के चिकित्सा अनुसंधान संकाय (एसीएसआईआर-आईसीएमआर-एफएमआर) के शुभारंभ के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। इस परिवर्तनकारी पहल का उद्देश्य भारत में जैव चिकित्सा अनुसंधान में क्रांतिकारी बदलाव लाना है, जिसमें अंतर-विषयक अध्ययनों को बढ़ावा देना और पीएचडी डिग्री प्रदान करना शामिल है।

9. अपने अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को और मजबूत करने के लिए, आईसीएमआर ने मौजूदा रिक्तियों को भरने के लिए एक मिशन-मोड भर्ती अभियान चलाया, जिससे इसके कार्यबल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

10. स्वास्थ्य सेवा नवोन्मेषों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई की है, जिसमें आईसीएमआर ने सीडीएससीओ के साथ और नीति आयोग के मार्गदर्शन में एक सहयोगी पहल, हमारे मेडटेक मित्र प्लेटफॉर्म के माध्यम से इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई है। यह प्लेटफॉर्म विनियामक सुविधा, प्री-क्लिनिकल और क्लिनिकल मूल्यांकन, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन (एचटीए) और नए उत्पादों के उपयोग सहित व्यापक सहायता प्रदान करता है।

11. मुख्य उपलब्धियों में हीमोफीलिया ए और वॉन विलेब्रांड रोग (वीडब्ल्यूडी) के लिए एक तीव्र, लागत प्रभावी डायग्नोस्टिक किट का विकास और भारत की पहली रैपिड एमपॉक्स टेस्ट किट का विकसित करना शामिल है, जो ₹350-400 की कम लागत पर एक घंटे के भीतर परिणाम देती है। इन उन्नतियों ने प्रकोपों पर तेज़ी से प्रतिक्रिया करने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार किया है।

12. आईसीएमआर के नवोन्मेष आणविक नैदानिकता तक विस्तारित हुए हैं, जहाँ हमने क्लैरिथ्रोमाइसिन-प्रतिरोधी हेलिकोबैक्टर पाइलोरी, सह-संक्रमण जैसे विसेरल लीशमैनियासिस और तपेदिक और मलेरिया के लिए क्रिस्पर-कैस13-आधारित नैदानिकता का पता लगाने के लिए उपकरण विकसित किए हैं।

13. देश की महामारी संबंधी तैयारियों को बढ़ाने के लिए, आईसीएमआर ने विभिन्न तीव्र सिंड्रोम के लिए प्राथमिकता वाले रोगजनकों की पहचान की है, जिसमें अनडिफरेंशिएटिड बुखार, एन्सेफलाइटिस, डायरिया और श्वसन संक्रमण शामिल हैं। इन सिंड्रोमिक बीमारियों के व्यापक परीक्षण हेतु निगरानी, वायरल अनुसंधान और नैदानिक प्रयोगशालाओं (वीआरडीएल) में की जाती है।

14. भारत में प्रचलित विभिन्न रोगजनकों के लिए मल्टीप्लेक्स आणविक नैदानिक परीक्षण विकसित करने के लिए स्वदेशी निर्माताओं को बढ़ावा दिया गया है और उनकी सहायता की गई है।

15. एशियाई भारतीयों में मधुमेह के लिए कम कीमत वाले जांच उपकरण के रूप में भारतीय मधुमेह जोखिम स्कोर की मान्यता ने प्रभावशाली, साक्ष्य-संचालित समाधानों के साथ विविध स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए आईसीएमआर की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है।

16. आईसीएमआर-डीएचआर को भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के तत्वावधान में शुरू किए गए नेशनल वन हेल्थ मिशन की गतिविधियों के लिए सचिवालय के रूप में नामित किया गया है। इस मिशन के तहत, मानव, पशु और पर्यावरणीय तत्वों के नमूनों की समग्र जांच के लिए 21 बीएसएल-3 प्रयोगशालाओं का एक अंतर-विभागीय नेटवर्क स्थापित किया गया है और प्रशिक्षण दिया गया है।

17. सार्वजनिक-निजी भागीदारी के अंतर्गत, स्थानीय स्तर पर स्थानिक रोगों के लिए चिकित्सा प्रतिरोधक विकसित करने की पहल की गई थी, जिसमें क्यासनूर फॉरेस्ट डिजीज के लिए टीका और निपाह वायरस रोग के लिए मोनोक्लोनल एंटीबॉडी शामिल हैं।

18. नये उभरते रोगजनकों का शीघ्र पता लगाने के लिए पक्षी अभयारण्यों, बूचड़खानों और चिड़ियाघरों जैसे पशु-मानव इंटरफेस पर निगरानी लागू करने के लिए पायलट परियोजनाएं शुरू की गई हैं।

19. एक्स्ट्राम्यूरल परियोजना वित्तपोषण और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में आईसीएमआर-डीएचआर उत्कृष्टता केंद्रों के साथ सहयोग के माध्यम से , आईसीएमआर ने आई-स्कोप(i-Scope) सहित कई नवोन्मेष विकसित किए हैं, जो एक स्वचालित माइक्रोस्कोपी उपकरण है जो गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के निदान में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है, और आर्टसेंस , एक छवि-मुक्त अल्ट्रासाउंड डिवाइस है जो रक्त वाहिकीय स्क्रीनिंग के लिए अधिक पहुंच को सक्षम बनाता है। इसके अलावा, तपेदिक निदान और प्रजनन परिणाम भविष्यवाणी के लिए एआई-संचालित उपकरणों ने अत्याधुनिक तकनीक का लाभ उठाने के लिए आईसीएमआर के समर्पण को प्रदर्शित किया है।

20. यकृत और गुर्दे के विकारों के लिए सीरम में एल्ब्यूमिन, प्रत्यक्ष बिलीरुबिन, कुल बिलीरुबिन और कुल प्रोटीन का पता लगाने के लिए विकसित एक पोर्टेबल पॉइंट ऑफ केयर डिवाइस ने भारत की जरूरतों के

अनुरूप टिकाऊ, लागत प्रभावी और परिवर्तनकारी स्वास्थ्य देखभाल समाधान प्रदान करने के लिए आईसीएमआर की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

21. आईसीएमआर ने दवा और वैक्सीन विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आईसीएमआर ने 6-मर्केप्टोप्यूरिन (PREVALL) के ओरल सस्पेंशन (PFOS) के लिए पाउडर तैयार करने का समर्थन किया है, जिससे ल्यूकेमिया उपचार की लागत 90% तक कम हो गई है।

22. शैंचोल के साथ मौखिक हैजा वैक्सीन (OCV) यूविचोल -प्लस के तुलनात्मक प्रतिरक्षाजनन और सुरक्षित अध्ययन ने शैंचोल की तुलना में यूविचोल -प्लस की गैर-हीनता को प्रदर्शित किया, इसने भारत में उपयोग के लिए यूविचोल -प्लस के लाइसेंस में योगदान दिया है। आईसीएमआर ने उपचार व्यवस्थाओं में उल्लेखनीय योगदान दिया है जिसके फलस्वरूप रोग प्रबंधन और रोगियों के परिणामों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

23. तपेदिक रोग (टीबी) देखभाल में की गई पहलों ने बहुऔषधि प्रतिरोधी टीबी (एमडीआर-टीबी) के लिए तीन छोटे ओरल उपचार पद्धतियों के लिए साक्ष्य प्रदान किए, जबकि एक नैदानिक परीक्षण ने स्वास्थ्य सुधार में तेजी लाने के लिए मानक टीबी उपचार में पिपेरिन को शामिल करने की प्रभावकारिता को प्रदर्शित किया ।

24. कैंसर देखभाल में प्रगति में उच्च जोखिम वाले न्यूरोब्लास्टोमा के लिए आइसोट्रेटिनॉइन की शुरूआत, सटीक खुराक सुनिश्चित करना और पहुंच में सुधार शामिल है।

25. आईसीएमआर सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों और प्रकोपों के प्रति भारत की प्रतिक्रिया में सबसे आगे है, जो राष्ट्र के स्वास्थ्य की सुरक्षा में लचीलापन और नवोन्मेष को प्रदर्शित करता है। ऑपरेशन कावेरी के दौरान पीले बुखार जैसे उभरते खतरों के लिए आईसीएमआर की तैयारी ने रणनीतिक दूरदर्शिता और नैदानिक तत्परता का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, खसरा और हेपेटाइटिस के प्रकोपों के प्रति आईसीएमआर की प्रतिक्रिया ने उन्नत परीक्षण, सामुदायिक आउटरीच और स्थानीय स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों के लिए क्षमता निर्माण के प्रयास शामिल थे।

26. डेंगू, चिकनगुनिया और वेस्ट नाइल वायरस जैसी वेक्टर जनित बीमारियों के लिए निगरानी और नियंत्रण उपायों को मजबूत किया गया, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने में भारत की क्षमता और मजबूत हुई।

27. आईसीएमआर ने विभिन्न तरीकों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों को समर्थन देना जारी रखा हुआ है। उदाहरण के लिए, हमने निदान उपकरणों को मान्यता दे कर, हाथ में पकड़े जाने वाले एक्स-रे उपकरणों को तैनात करके और राज्यों की टीमों के सहयोग से सक्रिय मामले की खोज को सुविधाजनक बनाकर राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

28. एनीमिया मुक्त भारत पहल में आईसीएमआर के योगदान, विशेष रूप से गर्भावस्था के दौरान अंतःशिरा आयरन के उपयोग पर सिफारिशों ने राष्ट्रीय कार्यक्रम को मजबूत करने में मदद की । आईसीएमआर ने भारतीय

उच्च रक्तचाप नियंत्रण पहल को भी आगे बढ़ाया, सिकल सेल एनीमिया के लिए त्वरित निदान में अग्रणी भूमिका निभाई और आयुष्मान भारत के माध्यम से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का समर्थन किया।

29. निष्कर्ष के तौर पर, वर्ष 2023-24 के दौरान, आईसीएमआर ने महत्वपूर्ण स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए डाटा-संचालित अंतर्दृष्टि, अत्याधुनिक तकनीक और रणनीतिक साझेदारी का लाभ उठाया है। इन चुनौतियों का समाधान करने और प्रभावशाली समाधानों को बढ़ावा देने के लिए आईसीएमआर की प्रतिबद्धता राष्ट्रीय और वैश्विक स्वास्थ्य लक्ष्यों के साथ संरेखित है, जो संगठन को स्वास्थ्य सेवा नवाचार और वितरण में अग्रणी के रूप में स्थापित करता है। इन प्रयासों के माध्यम से, आईसीएमआर ने भारत के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य को आगे बढ़ाने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। आईसीएमआर अनुसंधान, नवोन्मेष, सामरिक वित्त पोषण और नीति निर्माण में निरंतर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है, सार्वजनिक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार करता है और भारत को विकसित भारत 2047 के अपने विजन की ओर ले जाने में योगदान दे रहा हैं।

अधिप्रमाणित

(प्रतापराव जाधव)
आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री

(प्रतापराव जाधव)
(PRATAPRAO JADHAV)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
Minister of State for Health & Family Welfare
भारत सरकार, नई दिल्ली
Govt. of India, New Delhi